ISSN No. 2349-4654
नाद – नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक
वर्ष : 1, अंक : 1, नवम्बर 2014

अद्भुत व्यक्तित्व के धनी उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ तथा उनकी कुछ बन्दिशें

सुयश शर्मा
शोधार्थी, संगीत विभाग
दयालबाग शिक्षण संस्थान, दयालबाग, आगरा

प्रो. लवली शर्मा
संगीत विभाग
दयालबाग शिक्षण संस्थान, दयालबाग, आगरा

सार-संक्षेप

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब का जन्म सन् 1899 में मेरठ में हुआ था। आपके पितामह हस्सू खाँ साहब दिल्ली घराने के नामी कलाकार थे। उस्ताद शम्मू खाँ साहब आपके चचेरे भाई उस्ताद अब्दुल खाँ तथा उस्ताद रमजान खाँ आदि सभी अपने समय के प्रसिद्ध तबला वादक माने जाते हैं। पितामह हस्सू खाँ साहब व पिता उस्ताद शम्मू खाँ के तबला वादन के तालमय वातावरण में ही इनका लालन-पालन हुआ, अत: बचपन से ही आपको दिल्ली व अजराड़ा घराने का तबला सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपने दिल्ली घराने के उस्ताद मुनीर खाँ साहब तबले की शिक्षा ग्रहण की थी। उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थे। उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब एक दृढ़ निश्चयी कलाकार थे। यदि वे अपने मन में कोई काम करने की ठान व सोच लेते थे तो जब तक वे काम पूरा नहीं कर लेते थे, तब तक वे चैन से नहीं बैठते थे। उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब ने अद्भुत बंदिशों का निर्माण कर संगीत के कोश को और भी सम्पन्न किया। जुलाई सन् 1972 में लम्बी बीमारी व आर्थिक विपन्नता से जूझते हुये आपने अपने प्राण त्याग दिये।

शोध-पत्र

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब का जन्म सन् 1899 में मकान नं.-5, मुलाना गेट सिपट बाजार मेरठ में हुआ था।[1] आपने संगीतमय परिवार में जन्म लिया था। जिसमें आपके पितामह उस्ताद हस्सू खाँ साहब दिल्ली घराने के नामी कलाकार थे, आपके पिता उस्ताद शम्मू के साथ आपके चचेरे भाई उस्ताद अब्दुल खाँ तथा उस्ताद रमजान खाँ आदि सभी अपने समय के प्रसिद्ध तबला वादक माने जाते थे।[2] पितामह उस्ताद हस्सू खाँ साहब व पिता उस्ताद शम्मू खाँ के तबला वादन के तालमय वातावरण में ही इनका लालन-पालन हुआ, अत: बचपन से ही आपको दिल्ली व अजराड़ा घराने का तबला सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिससे इनकी रुचि तबला वादन में विकसित होती चली गयी।

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब ने सर्वप्रथम तबले की शिक्षा अपने पिता उस्ताद शम्मू खाँ से ली थी। तबला वादन में आपकी रुचि को देखकर आपके पिता ने आपको दिल्ली घराने के उस्ताद मुनीर खाँ साहब से शिक्षा ग्रहण करायी। आपने मुनीर खाँ साहब के अतिरिक्त उस्ताद अली रजा से भी तबला-वादन की शिक्षा ग्रहण की थी।[3]

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब एक दृढ़ निश्चयी कलाकार थे, यदि वह अपने मन में कोई काम करने की ठान लेते थे, तो जब तक वह काम पूरा नहीं कर लेते, तब तक वे चैन से नहीं बैठते थे। आपके व्यक्तित्व से यह खूबी कई बार नजर आयी।

एक बार कलकत्ता में एक संगीत सभा में एक तबला वादक ने 'धिर धिर' जैसा शब्द खूब तैयारी से श्रोताओं के सम्मुख प्रस्तुत किया था, लेकिन उस खुले धिर धिर को सुनकर मन में उन्होंने बंद मुट्ठी का 'धिर धिर' बजाने की ठान ली। जैसे ही आप मंच पर विराजमान हुऐ, तब आपके मुख से तुरंत निकल गया, कि—''**इन्होंने हथेली खोलकर 'धिर धिर' बजाया, उसे ही बंद करके मैं आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ।**'' आप गद्दी की 'धिर धिर' बजाया करते थे परन्तु उस दिन आपने श्रोताओं के सामने उसी बन्द 'धिर धिर' को खूब आसानी से प्रस्तुत किया, जिसके कारण आप तबला जगत में एक उच्च कोटि के अद्वितीय कलाकार के रूप में पहचाने जाने लगे।[4]

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब एक स्वाभिमानी कलाकार थे। यदि कोई बात उनके सम्मान को लग जाती थी तो फिर उनका कितना भी नुकसान क्यों न हो जाए, वह उसके साथ समझौता नहीं करते थे।

कहा जाता है, कि उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब को पदम् विभूषण अवार्ड के लिए चुना गया था परन्तु उन से पूर्व उस्ताद अहमद जान थिरकवा, पं. ज्ञान प्रकाश घोष आदि उनके समकलीन कलाकारों को चुना गया था। इसीलिए उन्होंने अवार्ड लेने से इनकार करते हुए यह कहा था कि—''जिन्हें आधा तबला भी नहीं आता है, उन्हें मुझ से पहले अवॉर्ड दिया गया है, अब मुझे अवॉर्ड नहीं चाहिए। क्योकि उन सभी में और मुझ में कुछ तो फर्क होना चाहिए।''[5]

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के व्यक्तित्व की एक खास बात थी, कि वह सभी के साथ मिल-जुलकर रहना पसन्द करते थे। जब वह बच्चों के साथ होते थे, तब वह बच्चे बन जाते थे। छोटे बच्चों के साथ संगत करते समय वह बिल्कुल बच्चों के स्तर के अनुसार ही वादन करते थे, तथा उन्हें प्रोत्साहित भी करते थे।[6]

कहा जाता है कि एक बार लखनऊ के नवाब ने जब उनका तबला वादन सुना तब उन्होंने खाँ साहब से कहा—''कि तबला तो बहुत सुना है परन्तु ऐसा तबला न देखा है, और न सुना है।'' माँगों तुम्हे क्या माँगना है— तब उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब ने कहा कि ''मेरे पास अल्लाह का दिया हुआ सब कुछ है, जब उसने बिना माँगे ही सब कुछ दे दिया तो अब मैं उस से क्या माँगू। मुझे कुछ नहीं चाहिए।''[7]

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब ने दिल्ली घराने की शिक्षा के अनुरूप अपने वादन में दो उँगलियों का प्रयोग तो किया ही, उसके साथ-साथ तीसरी उँगली अनामिका का भी प्रयोग किया, जो कि अजराडा घराने की विशेषता है। अनामिका उँगली का प्रयोग मुख्य रूप से 'नगधिन, तिगनग, धिडाऽन' आदि बोल समूह के निकास में करते थे तथापि 'ना' वर्ण का वादन मुख्य रूप से चॉटी पर ही करते थे जो कि उनके कुछ कायदो में साफ दिखायी देता हैं। तीन ताल में बजाये जाने वाले कायदे की आड़ निम्नवत है। यह मुझे प्रोफेसर मानस दास गुप्ता से प्राप्त हुआ है।

तीन ताल में निबद्ध कायदा [8]

धाऽऽ घेतक दिंगदी नागिन । धातीघे घेतक तिंगती नाकिन।
ताऽऽ केतक तिंगती नाकिन। धातीघे घेतक दिंगदी नागिन।

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के वादन में एक और विशेषता परिलक्षित होती है कि आप 'दोहरी तिरकिट' का प्रयोग बहुत खुबसूरती के साथ करते थे, वे द्रुत लय को भी 'तिरकिट' को त्रक में परिवतर्तित ना करके 'तिरकिट' ही बजाते हैं। तिरकिट के ये प्रयोग युक्त एक बहुत सुन्दर कायदा निम्नवत है जिसमें आड़ के साथ ही अन्य लयकारियाँ भी प्रयुक्त हैं। यह कायदा भी मुझे प्रो. मानसदास गुप्ता से प्राप्त हुआ है—

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब की कतिपय बन्दिशें—

आप जितनी खूबसूरती से अजराडा घराने का वादन करते थे, उतना ही दिल्ली का भी करते थे। उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब अगि लय का प्रयोग बहुतायत रूप में करते थे, आप सर्वप्रथम कायदे की अगी लय में बजाकर उसी कायदे को सीधी लय में बजाकर दुगुन करके लोगो के सामने प्रस्तुत किया करते थे। आप अपने कायदो में लयकरियों का अधिक से अधिक प्रयोग करते थे जिनमें से मुख्यत: आड़ व कुआड़ होती थी। एक कायदे का उदाहरण आड़ लय में प्रस्तुत है जिसका उस्ताद हबीबुद्दीन खॉ साहब प्राय: वादन किया करते थे।

उदाहरण—

झपताल में निबद्ध कायदा [9]

धिऽऽ	*धागेन*	*।*	*धाऽऽ*	*धागेन*	*धागेति।*
रकिट	*धातीघे*	*।*	*धेतक*	*दिंगदि*	*नागिन।*
तिऽऽ	*ताकेन*	*।*	*ताऽऽ*	*ताकेन*	*ताकेति।*
रकिट	*धातीघे*	*।*	*घेतक*	*दिंगदि*	*नागिन।*

उदाहरण —

तीन ताल में निबद्ध कायदा [10]

धातिर किटतक तिरकिट तिरकिट। धाती धागे तिन किन
तातिर किटतक तिरकिट तिरकिट। धाती धागे धिन गिन

आपके वादन में कायदे के ही बोल से आप रेला शुरू कर देते थे तथा उसे बहुत ही खूबसूरती के साथ पेश कर देते थे।

जिसका उदाहरण निम्नवत है—

तीनताल में निबद्ध रेला [11]

धिन	*गिन*	*तक*	*धिन।*	*धिन*	*गिन*	*धाडा*	*गिन।*
तिन	*किन*	*तक*	*तिन।*	*धिन*	*गिन*	*धाडा*	*गिन।*

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब दिल्ली के छोटे-छोटे कायदों को अजराड़ा की शक्ल बनाकर अपने ही ढग में प्रस्तुत करते थे। यह रेला मुझे उस्ताद मंजू खाँ साहब से प्राप्त हुआ है। उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ आपके द्वारा बजाया एक झपताल का कायदा निम्नवत तालबद्ध किया गया है—

उदाहरण—

अजराड़ा घराने का कायदा झपताल में

धातीधाती	*धातिटधा।*	*धाधातिट*	*धातीधागे*	*धीनागिन।*
धातिटति	*टधातिट।*	*धाधातिट*	*धातीधागे*	*तीनाकिन।*
तातीताती	*तातिटता।*	*तातातिट*	*तातीताके*	*तीनाकिन।*
धातिटति	*टधातिट।*	*धाधातिट*	*धातीधागे*	*धीनागिन।*

हबीबुद्दीन खाँ साहब द्धारा बजाये जाने वाला एक अन्य कायदा प्रस्तुत है। ये कायदा मुख्यता तीन ताल में बजाया गया है। इस कायदे को परंपरागत छंद या तीन ताल के विभागों से अलग छंद में बाँधा गया है और छंदात्मक सौन्दर्य की उत्पत्ति की गयी है। तीन ताल के कायदे का छंद अधिकतर 4-4 मात्राओं के दो छंदों से आठ मात्राओं का होता है किन्तु दो बोल के इस कायदे के छंद में 2, 2½, 1 ½ और 2 मात्राओं से आठ मात्राओं का निर्माण किया गया है। इसी मूल कायदे का विस्तार हर प्रदर्शन में अलग-अलग ढंग से किया गया है। सन् 1944 ई. में इस कायदे की बढ़त में तिरकिट का विस्तार इस प्रकार से है।

कायदा दिल्ली—तीन ताल [12]

धाडकड़धातीधागेना	*धागेधिनागिनाधागेधिना*	*धातीधागेधिना*	*धातिधागेतिनाकिना*
धाडकड़धातिधागेना	*धागेतिनाधागेतिनाकिना*	*धातिरकिटधाती*	*धागिनाताकेतिनाकिना*
ताडकड़तातीताकेना	*ताकेतिनाकिनाताकेतिना*	*तातितागेतिना*	*तातीताकेतिनाकिना*
धाडकड़धातिधागेना	*धागेतिनाधागेतिनाकिना*	*धातिरकिटधाती*	*धागिनाधागेधिनागिना*

विस्तार - 1

धाडकड़धा	तिधागेना	धागेतीनाकि	टधातिरकिट।
धातिरकिटतक	तकधातिरकिट	धातीधागे	तिनाकिना।
ताडकड़ता	तिताकेना	ताकेतीनाकि	टतातिरकिट।
धातिरकिटतक	तकधातिरकिट	धातीधागे	धीनागिन।

विस्तार-2

धातिरकिटतक	तकधातिरकिट	धातिरकिटतक	तकधातिरकिट।
धातिरकिटतक	तकधातिरकिट	धातिधागे	तिनाकिना।
तातिरकिटतक	तकतातिरकिट	तातिरकिटतक	तकतातिरकिट।
धातिरकिटतक	तकधातिरकिट	धातिधागे	धीनागिन।

उक्त कायदे की विशेषता ये है कि— ''धागेधिनागिना धागेधिना'' बोलों का बार-बार प्रयोग करने से इसमें नादात्मक बैचित्र्य दृष्टिगत होता है जिससे उसके बोलों में विशेष सौन्दर्य उत्पन्न होता है। उक्त कायदे का विस्तार 1 और 2 में जो उस्ताद जी ने सन् 1956 में संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली के कार्यक्रम में बजाया था उसे ध्यान से सुनने पर ज्ञात होगा कि इस कायदे में 'धातिरकिट' बोल का विस्तार करते हुए उसमें 'धातिरकिटतकतक धातिरकिटतक' विस्तार कर उसकों अलग अलग ढंग से बजाया गया है।

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के कायदा वादन की एक बहुत ही खूबसूरत विशेषता नजर आती है कि वह कभी कभी खाली के बोलों में परिवर्तन करके कायदा वादन किया करते थे। इसी विशेषता युक्त एक बहुत ही सुन्दत कायदा निम्नवत है—

उदाहरण—

तीनताल में निबद्ध कायदा [13]

धाऽधाऽधाऽ	*धिनधाऽधेन*	*धाधाधेधेतक*	*धिनीधनागेन।*
धिनधाऽधेन	*धागेतिरतिर*	*धाधाधेधेतक*	*धिनीधनागेन।*
तिऽऽनाडऽना	*ताकेतिरतिर*	*तालाकेकेतक*	*तिनतिनाकेन।*
धिऽधाऽधिन	*धागेतिरतिर*	*धाधाधेधेतक*	*धिनधिनागेन।*

रेला उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब की अति विशिष्ट रचना है और इसमें तबले के सबसे मुश्किल बोलों में से ''धिर धिर'' का प्रयोग हुआ है। खाँ साहब के इस रेले को अति विशिष्ट रचनाओं में सम्मिलित किया जा सकता है क्योंकि खाँ साहब मुख्यत: इस रचना का वादन दो तरह की निकासी से करते थे पहली निकासी में वो पूरब अंग से 'धिर धिर' हथेली से, दूसरी निकासी से जो उन्होंने स्वयं ही इजाद की थी वो थी बन्द मुट्ठी करके 'धिर धिर' बजाना जो शायद न किसी ने सोचा होगा और न ही किसी ने किया होगा। इसीलिए ये खाँ साहब की एक विशिष्ट रचना है। इस रचना में खाँ साहब ने धिर धिर का विस्तार बहुत ही खूबसूरत तरीके से किया है। आपके द्वारा बजाया गया बन्द मुटठी की 'धिर धिर' का रेला तीन ताल में प्रस्तुत है—

उदाहरण—

तीनताल में निबद्ध रेला [14]

	धातिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धातिरकिटतक	तिनाकिटतक।
	ततिरकिटतक	तिरतिरकिटतक	धातिरकिटतक	तिनाकिटतक।
	धातिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धातिरकिटतक	तिनाकिटतक।
	ततिरकिटतक	तिरतिरकिटतक	धातिरकिटतक	तिनाकिटतक।

विस्तार—

1.	धातिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धातिरकिटतक	धिरधिरकिटतक।
	धातिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धातिरकिटतक	तीनाकिटतक।
	तातिरकिटतक	तिरतिरकिटतक	तातिरकिटतक	तिरतिरकिटतक।
	धातिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धातिरकिटतक	तीनाकिटतक।
2.	धातिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धिरधिरकिटतक।
	धिरधिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	तिनाकिटतक।
	तातिरकिटतक	तिरतिरकिटतक	तिरतिरकिटतक	तिरतिरकिटतक।
	धिरधिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	तिनाकिटतक

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब की विशिष्ट रचनाओं में से एक रचना गत भी है यह एक विशेष प्रकार की गत है, जिसे मंझेदार गत कहते है इस गत की विशेषता है कि इसका एक हिस्सा जिस बोल से खत्म होता है दूसरा हिस्सा उसी बोल से प्रारम्भ होता है यह गत झप ताल की रचना है खाँ साहब इसे झप ताल में बजाते थे इस गत में 6वीं मात्रा ''धिन'' बोल से समाप्त होती है और 7वीं मात्रा ''धिन'' से प्रारम्भ होती है। 10वीं मात्रा ''गे'' से समाप्त और 11वीं मात्रा ''गे'' से प्रारम्भ होती है 14वीं मात्रा ''क्त'' पर समाप्त और 15वीं मात्रा ''क्त'' पर समाप्त होती है इसे अन्ताक्षरी गत भी कहते हैं।

उदाहरण—

झप ताल में निबद्ध गत

क्तधाऽ किटतक	ताकितधा ऽनधागे तिटकिट	धिऽऽऽन धिनधिन	धिनधागेतिटकिट गेऽऽऽ	गेऽतडा ऽनधागे
तिटकताकऽऽतक्ततिट	गेगेतिट	कताऽन गिऽनाऽ	धिऽटऽ कऽताऽ	क्तधिरधिर
किडतकताकिट धाऽगिना	किडतकताकिट धाऽऽऽ	गिऽनाऽ	तिऽटऽ कऽताऽ	कऽधिरधिर किडतकताकिट धाऽगिना
किडतकताकिट धाऽऽऽ	गिऽनाऽ तिऽटऽ कऽताऽ	कऽधिरधिर	किडतकताकिट	धाऽगिना किडतकताकिट धाऽऽऽ। धी

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब ने जहाँ अनगिनत उत्कृष्ट एवं अद्‌भुत बन्दिशों की रचना की है, उन्होंने उनका प्रस्तुतीकरण बहुत ही खुबसूरती से किया।

जीवन संध्या—उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब का तबला वादन सन् 1940 से 1960 तक अपने चरमोत्कर्ष पर था परन्तु सन् 1962 में जब शेख अब्दुल्ला भारत आया था तब मेरठ में काफी दंगे हुए थे, उन दंगों के दौरान ही उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब को उनकी छत से नीचे फैक दिया गया था, जिससे उनकी रीढ़ की हड्डी टूट गयी और वे पक्षाघात के शिकार हो गये। उन्ही दंगों में खाँ साहब का घर-वार बरबाद हो गया तथा जो कभी अपने यहाँ औरों को पनाह देते थे, उस घटना के बाद वो खुद पनाह लेने के लिए तरस गये थे।[15]

लम्बी बीमारी व आर्थिक विपन्नता से जूझते हुए आपका 1 जुलाई 1972 को देहावसान हो गया।[16] प्राप्त रिकोर्डिंग एवं संगीतज्ञो से साक्षात्कार के माध्यम से शोधकत्री ने कई बन्दिशें प्राप्त कर उनकी विशेषताऐं निकालने का प्रयास किया है। उक्त शोध पत्र में खाँ साहब द्वारा रचित कुछ ही चुनिन्दा बन्दिशों की चर्चा की है एवं उनके माध्यम से खाँ साहब की अदभुत कला को उदघाटित करने का प्रयास किया है।

पाद-टिप्पणियाँ

1. साक्षात्कार उस्ताद मंजू खाँ साहब
2. संगीत कला विहार वर्षा 2006
3. मिस्त्री, अबान ई., पखावज और तबला के घरानें एवं परम्मपरायें, पृ. 143
4. संगीत कला विहार, वर्ष 2006 पृ. 23
5. साक्षात्कार प्रो. मानस दास गुप्ता 10.07.2014
6. साक्षात्कार उस्ताद मंजू खाँ साहब 22.06.2014
7. साक्षात्कार उस्ताद युसुफ खाँ साहब 15.03.2013
8. मंजू खाँ साहब से प्राप्त, साक्षात्कार तिथि, 22.6.14
9. यह कायदा मुझे मानस दास गुप्ता से प्राप्त हुआ है। जो कि वर्तमान समय में तबला विभाग दयाल बाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट दयालबाग, आगरा में आमंत्रित प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं।
10. वही
11. यह रेला उस्ताद मंजू खाँ साहब के साक्षात्कार से प्राप्त हुआ। साक्षात्कार तिथि 22.6.14
12. संगीत नाटक अकादमी द्वारा रेकार्डिर्ड उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के तबला वादन से प्राप्त रेकार्डिग तिथि मार्च, 1956 साक्षात्कार उस्ताद हशमत अली खाँ साहब 23.09.2013
13. मंजू खाँ साहब से प्राप्त, साक्षात्कार तिथि, 22.6.14
14. वही
15. साक्षात्कार उस्ताद हशमत अली खाँ साहब 23.09.2013
16. साक्षात्कार उस्ताद मंजू खाँ साहब 22.06.2014

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मिस्त्री, अबान ई., पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएँ, केकी एस. प्रकाशन 20002

संगीत कला विहार, वर्ष 2006